9. **परीक्षा में असफल होने वाले मित्र को पुनः अध्ययन के लिए प्रेरित करते हुए पत्र लिखिए।**

WZ-7, रामदत्त एन्क्लेव
उत्तम नगर
नई दिल्ली-110059
14 जुलाई, 20××

प्रिय मित्र सोमनाथ,
सप्रेम नमस्कार।

कल ही तुम्हारा पत्र मिला। इस वर्ष का परीक्षाफल संतोषजनक नहीं रहा यह जानकर दुख हुआ। किंतु उसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है। सड़क-दुर्घटना में दाएँ हाथ की हड्डी टूटने के कारण दो माह तक तुम बिस्तर पर रहे। इसके बाद लगभग दो माह तक पीलिया के कारण बीमार रहे। इस बीच कमजोरी भी बढ़ गई। डॉक्टरों ने भी तुम्हें पुस्तक न पढ़ने की सलाह दी।

अब तुम ईश्वर की कृपा से स्वस्थ हो। स्वास्थ्य जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति है, जिस व्यक्ति का स्वास्थ्य चला गया उसका जीवन ही नष्ट हो गया। अब तुम इस वर्ष कठोर परिश्रम करके अच्छे अंक प्राप्त कर सकते हो। आज के इस प्रतिस्पद्र्धा वाले युग में अच्छे अंक तथा अच्छी श्रेणी का अपना अलग महत्व है।

मित्र अपने हृदय में व्याप्त निराशा तथा उदासी को त्यागकर नई आशा और विश्वास के साथ अध्ययन में लग जाओ। कठिन परिश्रम तथा साहस द्वारा इस संसार में कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है। कठोर परिश्रम से सब कुछ सुलभ है। तुम जिस घटना को अभिशाप समझ रहे हो यह भविष्य में वरदान सिद्ध होगी। कभी न गिरना गौरव नहीं है, अपितु गौरव तो गिर कर उठने में है। तुम परिश्रम करो सफलता तुम्हारे कदम चूमेगी।

आदरणीय पिताजी तथा माताजी को चरण-स्पर्श कहना।

तुम्हारा मित्र
विश्वनाथ शर्मा

Scanned with CamScanner

3. बधाई-पत्र के प्रत्युत्तर में कृतज्ञता व्यक्त करते हुए पत्र लिखिए–

3/287 सूरज विहार कालोनी
किशनपुर तिराहा
लक्ष्मीबाई मार्ग
अलीगढ़, उ. प्र.

प्रिय शकुंतला
सस्नेह स्मरण !

आज ही तुम्हारे द्वारा प्रेषित बधाई-पत्र पाकर अत्यन्त प्रसन्नता मिली। आजकल ढेर सारे बधाई-पत्र आने से प्रसन्नता का वातावरण बना हुआ है। विद्यालय से, मित्रों से, अध्यापकों से, संबंधियों से, परिचितों तथा अपरिचितों से ढेरों बधाई पत्र, कार्ड तथा टेलीफोन आ रहे हैं किंतु तुम्हारा बधाई-पत्र पाकर मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ, क्योंकि मेरे जीवन में तुम्हारा तथा तुम्हारी मित्रता का स्थान सर्वोपरि है। तुम्हारी प्रेरणा से ही मैंने यह सफलता प्राप्त की है। तुमने सदैव मुझे आगे बढ़ने हेतु प्रेरित किया है। सफलता या असफलता में सदैव तुम्हारे शब्दों ने मुझे शक्ति प्रदान की है। तुम्हारे उत्साह के अभाव में सफलता के शिखर पर पहुँचना मेरे लिए सम्भव नहीं था।

प्रिय शकुंतला ! तुम्हारे पत्र का एक-एक शब्द मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहा है। उस सीमा तक, जिसके आगे राह नहीं है। तुम्हारे शब्दों में शक्ति है, तुम्हारी वाणी में आगे बढ़ने की प्रेरणा है। यदि तुम मुझे इसी प्रकार प्रेरित करती रहीं तो अवश्य ही मैं तुम्हारे सपनों को साकार कर सकूँगी।

तुम्हारे बधाई पत्र की कृतज्ञता हेतु मेरे पास शब्द नहीं हैं। न ही मेरे शब्दों में ऐसी सामर्थ्य है कि तुम्हारे प्रति कृतज्ञता प्रकट कर सकूँ।

मम्मी, पापा को सादर नमस्कार तथा अंकिता को स्नेह कहना।

तुम्हारी सखी
कुसुम जायस

4. अपने छोटे भाई को पत्र लिखिए, जिसमें कुसंगति से बचने की चेतावनी दीजिए।

एल-1/शहीद नगर
राजपुर चुंगी
आगरा

प्रिय आनंद,
चिरायु भव।

आज तुम्हारे विद्यालय के प्राचार्य का पत्र मिला जिसे पढ़ते ही ऐसा लगा कि तुम्हें संस्कार देने में हमसे कुछ कमी रह गई है। इसी कारण तुम अपने विद्यालय के कुछ छात्रों की कुसंगति में फँस गए हो। तुम उन विद्यार्थियों के साथ रहते हो जिनके जीवन का कोई उद्देश्य नहीं है, उनका ध्यान भी अध्ययन की ओर नहीं है।

जब तुम्हें छात्रावास में प्रवेश दिया गया था, सभी अध्यापक तुम्हारी भूरि-भूरि प्रशंसा करते थे और कहते थे कि आनंद ही हमारे स्कूल का नाम रोशन करेगा। वही अध्यापक आज तुम्हारे उत्तीर्ण होने पर आशंका व्यक्त कर रहे हैं। बुरी संगति का परिणाम अत्यंत दुखदाई होता है। जो व्यक्ति कुसंगति में एक बार फँस गया वह जीवन भर इस कुचक्र से नहीं निकल पाता। समाज में उसका कोई सम्मान नहीं रहता, उसमें अनेक दुर्गुण और व्यसन आ जाते हैं। विद्यार्थी जीवन में यदि एक बार कोई छात्र इसके चक्रव्यूह में फँस जाए तो वह न अपना, न समाज का और न राष्ट्र का ही भला कर सकता है। अतः मैं तुम्हें समझाना चाहता हूँ कि तुम तुरन्त बुरे छात्रों की संगति छोड़कर अध्ययन में मन लगाओ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त कर लोगे। मेरी सलाह पर यदि तुमने अमल किया तो निश्चय ही तुम अपना भविष्य उज्ज्वल बना लोगे।

घर में सभी कुशल हैं। अपनी कुशलता का समाचार लिखना।

तुम्हारा शुभ चिंतक
चंद्र प्रकाश उपाध्याय

Scanned with CamScanner